

डॉ. जेफ़री नीहौस, बाइबिल धर्मशास्त्र, सत्र 2, आदमिक वाचा, भाग 2

© 2024 जेफ़री नीहौस और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेफ़री नीहौस द्वारा बाइबिल धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 2 है, आदमिक वाचा, भाग 2।

जैसा कि हमने कहा था, हम आदमिक वाचा के विचारों के साथ आगे बढ़ने जा रहे हैं।

जैसा कि हमने कहा, हम उत्पत्ति 1 और उत्पत्ति 2 के बीच के संबंध के बारे में बात करेंगे। आप पढ़ सकते हैं कि आप अक्सर सुनते हैं कि दो सृष्टि विवरण हैं। और यह एक बुरी अभिव्यक्ति नहीं है जब तक कि कोई इसे उस तरीके से समझता है जो सामग्री के लिए सही है। यदि दो सृष्टि विवरणों से हमारा मतलब दो अलग-अलग लेखकों द्वारा दो अलग-अलग धर्मशास्त्रों और दृष्टिकोणों के साथ दो अलग-अलग विवरण हैं, तो मुझे लगता है कि इसे देखने का यह एक अच्छा तरीका नहीं है।

इसे देखने का एक बेहतर तरीका यह है कि इसे प्राचीन निकट पूर्वी सामग्री और कथा के प्रवाह के रूप में देखा जाए, जिसमें आपको एक सामान्य विवरण मिलता है और फिर उस विवरण के बारे में कुछ विवरणों पर ज़ूम किया जाता है। बेशक, जब उच्च आलोचना विकसित हुई, तो प्राचीन निकट पूर्वी लेखन लगभग अज्ञात था। और चूंकि कोई बाहरी नियंत्रण नहीं था, इसलिए लोगों ने चीजों की रचना कैसे की, इस संदर्भ में बाइबल के अलावा किसी के पास तुलना करने के लिए कुछ भी नहीं था।

लोग जो चाहें कल्पना कर सकते थे कि किसने क्या लिखा। और इसलिए हमारे पास यह जेईडीपी व्यवसाय है, जो कि प्राचीन लोगों के लिखने के तरीके से पूरी तरह से असत्य है। ऐसा कहने के बाद, यह दृष्टिकोण है, यह यही दृष्टिकोण रहा है, और यह अभी भी मौजूद है, कि आपके पास दो विरोधाभासी खाते हैं।

ऑक्सफोर्ड में अंग्रेजी विद्वान एस.आर. ड्राइवर, जो ऑक्सफोर्ड में अंग्रेजी ओल्ड टेस्टामेंट के विद्वान हैं, संभवतः अंग्रेजी बोलने वाले विश्व में इसके प्रमुख समर्थक थे। विडंबना यह है कि उन्हें ऑक्सफोर्ड द्वारा इसलिए नियुक्त किया गया क्योंकि वे यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति मिले जो महाद्वीप पर प्रचलित उच्च आलोचना को न मानता हो। और जब उन्होंने ड्राइवर को नियुक्त किया, तो उनका बाइबल के बारे में एक रूढ़िवादी दृष्टिकोण था।

लेकिन अंततः वह उच्च आलोचनात्मक दृष्टिकोण में परिवर्तित हो गया और उसका एक प्रमुख प्रतिपादक बन गया। और आप ड्राइवर को पढ़ सकते हैं और बहुत कुछ सीख सकते हैं, लेकिन आपको यह समझना होगा कि पूर्वधारणाएँ गलत हैं। इसलिए, जिस तरह से वह उत्पत्ति और पुराने नियम में कुछ चीजों को देखता है वह बहुत ही दोषपूर्ण है।

लेकिन वैसे भी, उन्होंने सोचा कि अलग-अलग स्रोतों के कारण ये दो अलग-अलग दस्तावेज़ थे। इसका क्लासिक कारण यह है कि, उत्पत्ति 1 एक पुजारी लेखक द्वारा लिखा गया है। उत्पत्ति 2 में, आपके पास दस्तावेज़ J और E संयुक्त हैं।

पुजारी लेखक दोहराव और सूत्रबद्ध होना पसंद करते हैं, जबकि उत्पत्ति 2 में, आपके पास एक अलग, बस प्रवाहपूर्ण कथा है। अब हम जानते हैं, और मैंने इसके बारे में बात नहीं की है, लेकिन यह पहले खंड में है, और यह एक लेख में भी है, जिसे मैंने जर्नल ऑफ़ इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी के लिए वाचा और कथा पर लिखा था। उत्पत्ति 1:1 से 2:3 को समझने का एक और तरीका एक प्राचीन निकट पूर्वी सूची के रूप में है।

और सुमेरियन राजा सूची की तरह, इसमें एक कथा, एक सूत्रीय परिचय, प्रत्येक घटक के लिए एक निष्कर्ष और कथात्मक सामग्री है। और इसलिए यह एक सूची है। उच्च आलोचकों ने इसे नहीं समझा, लेकिन वे महसूस कर सकते थे कि यह दोहराव और सूची जैसा था, इसलिए उन्होंने इसे पी के लिए जिम्मेदार ठहराया, जो उनके अनुसार इस तरह से लिखना पसंद करते थे।

अब हम जानते हैं कि यह मूर्खतापूर्ण है। मेरा मतलब है, आप या मैं किसी ईमेल या मित्र को लिखे पत्र में किसी चीज़ का वर्णनात्मक विवरण लिख सकते हैं और उसमें उन स्थानों की सूची शामिल कर सकते हैं जहाँ हम गए थे या ऐसा कुछ। सूची तैयार करने के लिए आपको किसी दूसरे लेखक को बुलाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि केवल एक ही लेखक है जो सूचियाँ लिखना पसंद करता है।

तो, यह थोड़ा मूर्खतापूर्ण है, लेकिन उन्होंने ऐसा ही सोचा। लेकिन वैसे भी, यह तो है ही, और माना जाता है कि सृष्टि का क्रम भी अलग है। उत्पत्ति 1 में, परमेश्वर ने पहले जानवरों को बनाया, फिर मनुष्य को।

उत्पत्ति 2 में, जाहिर है, परमेश्वर ने पहले मनुष्य और फिर जानवरों को बनाया। लेकिन यह केवल जाहिरा तौर पर है, और यह इस बात पर बहुत निर्भर करता है कि कोई क्रिया का अनुवाद कैसे करता है। किंग जेम्स कहते हैं, "भूमि से, प्रभु परमेश्वर ने मैदान के सभी जानवरों और हवा के पक्षियों को बनाया, और वह उन्हें आदम के पास लाया ताकि देखे कि वह उन्हें क्या नाम देगा।"

खैर, उसने उन्हें बनाया। इसलिए, यदि आप इसे पढ़ते हैं, तो आपको यह आभास होता है, ठीक है, यहाँ आदम था, और फिर भगवान ने जानवरों को बनाया और उन्हें नाम देने के लिए लाया। यदि हम यहाँ सृष्टि के विभिन्न क्रम में उतरते हैं, तो यह अनुवाद पर निर्भर करता है।

क्रिया का अनुवाद किंग जेम्स की तरह किया जा सकता है, लेकिन इसका अनुवाद प्लूपरफेक्ट या पास्ट परफेक्ट के रूप में भी किया जा सकता है, जैसा कि NIV करता है। अब, भगवान भगवान ने मैदान के सभी जानवरों और इसी तरह की अन्य चीज़ों को ज़मीन से बनाया था। अगर इसका अनुवाद इस तरह किया जाता है, तो विरोधाभास गायब हो जाता है क्योंकि तब तस्वीर यह है, ठीक है, यहाँ उत्पत्ति 2 में आदम है। और वैसे, भगवान ने जानवरों को बनाया था।

उसने उन्हें कुछ समय पहले बनाया था, लेकिन अब वह उन्हें एडम के पास नाम देने के लिए लाता है। अगर आप इसे इस तरह से अनुवाद करते हैं, तो विरोधाभास गायब हो जाता है। और यह कहना होगा, ड्राइवर को यह पता था।

वह ऑक्सफोर्ड में हिब्रू के रेगियस प्रोफेसर थे। लेकिन आपने इसका जिक्र ही नहीं किया, और इसलिए जाहिर तौर पर आपके पास एक तर्क है। केन किचन ने अपनी किताब, प्राचीन ओरिएंट और ओल्ड टेस्टामेंट में, जिसका नाम इसलिए रखा गया है क्योंकि वह पुराने नियम को प्राचीन निकट पूर्व और उनके लेखन के संबंध में देख रहे हैं, कहते हैं कि, नहीं, हमारे पास यहां विरोधाभासी विवरण नहीं हैं।

हमारे पास पूरक विवरण हैं। जैसा कि मैंने कहा, प्राचीन निकट पूर्वी दस्तावेजों में, हमें वही चीज़ मिलती है: एक सामान्य विवरण। उसके बाद एक विस्तृत विवरण।

किचन का कहना है कि अक्सर यह दावा किया जाता है कि उत्पत्ति 1 और उत्पत्ति 2 में दो अलग-अलग सृष्टि कथाएँ हैं। हालाँकि, वास्तव में, दोनों खातों की सख्त पूरक प्रकृति काफी स्पष्ट है। उत्पत्ति 1 में मनुष्य के निर्माण का उल्लेख एक श्रृंखला के अंतिम भाग के रूप में किया गया है और इसमें कोई विवरण नहीं दिया गया है।

जबकि उत्पत्ति 2 में, मनुष्य रुचि का केंद्र है, एक ब्रिटिश विद्वान, इसलिए वर्तनी। उसके और उसकी सेटिंग के बारे में अधिक विशिष्ट विवरण दिए गए हैं। यहाँ कोई असंगत दोहराव नहीं है।

एक ओर सृष्टि की रूपरेखा और दूसरी ओर मनुष्य और उसके तात्कालिक पर्यावरण पर विस्तार से ध्यान केंद्रित करने के बीच विषय के पूरक स्वभाव को पहचानने में विफलता, अंधकारवाद की सीमा पर है। और यह एक ऐसा शब्द है जिसका शायद हम अक्सर इस्तेमाल नहीं करते। ऐसा कुछ जो कभी नहीं होना चाहिए।

लेकिन अंधविश्वास वह है जहाँ आप कुछ ऐसी बातें जानते हैं, जिन्हें अगर आप अपने तर्क पढ़ने वालों के साथ साझा करते हैं, तो वे आपके तर्क को कमजोर कर देंगे। लेकिन चूँकि वे आपके तर्क को कमजोर कर देंगे और इसे आपकी अपेक्षा से कम सुनिश्चित बना देंगे, इसलिए आप बस उस जानकारी को दबा देते हैं। अब, हम राजनेताओं से इसकी अपेक्षा करते हैं, लेकिन हम विद्वानों के साथ इसे बेहतर देखना चाहेंगे।

लेकिन यह ऐसा ही है। और ऐसा होता है। हम एक गिरती हुई दुनिया में रहते हैं।

तो फिर, सृष्टि के दूसरे वृत्तान्त के बारे में क्या? इसमें वह है जिसे हम कथात्मक प्रकृतिवाद कह सकते हैं। इसमें प्राकृतिक प्रक्रियाएँ शामिल हैं। क्लेन ने बहुत समय पहले अपने छोटे से लेख 'क्योंकि बारिश नहीं हुई थी' में इस बात की ओर इशारा किया था।

धरती पर अभी तक कोई भी झाड़ी नहीं उगी थी। मैदान का कोई भी पौधा अभी तक नहीं उगा पाया था। क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने धरती पर बारिश नहीं भेजी थी।

फिर से, जैसा कि किचन ने कहा, आप चीजों के विवरण पर गौर कर रहे हैं और जो कुछ हो रहा है उसके बारे में अधिक विस्तृत विवरण प्राप्त कर रहे हैं। जैसा कि मैंने पहले कहा है, उत्पत्ति 1-2 भी एक प्रक्रिया का संकेत दे सकता है। लेकिन यह केवल शुरुआत में ही संकेत देता है।

और उत्पत्ति 2 में, आपको बहुत अधिक कथात्मक विवरण मिलता है। हमने बगीचे के मंदिर होने के विचार के बारे में बात की है। और, ज़ाहिर है, यहीं पर उत्पत्ति 2 भी आता है।

लेकिन यह विचार और भी पुष्ट होता है क्योंकि याद रखें कि प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को बगीचे में काम करने और उसकी देखभाल करने के लिए रखा था, जो पुरोहित की भूमिकाएँ थीं। हमें उत्पत्ति 2:9, और 10 में नदी और बगीचे में जीवन के पेड़ के साथ ये समानताएँ मिलती हैं जब हमें यहजेकेल और जॉन को दिए गए युगांत संबंधी दर्शन मिलते हैं कि जब प्रभु आएंगे और सभी के लिए मुसीबतें खड़ी करेंगे और हमारे पास चीजों का एक नया क्रम होगा तो चीजें कैसी होंगी। और इसलिए, आपके पास पानी बहता हुआ है, नदी, अगर आप चाहें तो, भगवान की मंदिर उपस्थिति से बह रही है, नदी के किनारे फलदार पेड़ और जीवन का पेड़ उग रहा है, और इसी तरह।

ये दो तत्व मुख्य बातें हैं। मुझे लगता है कि यहजेकेल और जॉन ने एक ही रहस्योद्घाटन देखा, हालाँकि फिर से, जॉन में, आपको अधिक विवरण मिलते हैं। यह सच है क्योंकि बाइबल आगे बढ़ती है; आपको कुछ दर्शन या सिद्धांतों में अधिक विवरण मिलते हैं क्योंकि आपको बाद के रहस्योद्घाटन मिलते हैं।

आखिरकार आप यहाँ क्या पाते हैं, और मुझे लगता है कि यह तब तक थोड़ा रहस्यमय रहेगा जब तक हम प्रभु के साथ नहीं होते, इस सबका चरमोत्कर्ष यह है कि शहर में कोई मंदिर नहीं है। हमें याद होगा कि प्रकाशितवाक्य 4 में, प्रभु अपने सिंहासन से गरज रहे हैं। ऐसा लगता है कि वहाँ एक मंदिर की उपस्थिति है। एक स्वर्गीय निवास है जिसके बाद सांसारिक प्रतिरूपित किया जाता है; यहाँ तक कि इब्रानियों ने भी इसके बारे में बात की है।

लेकिन आखिरकार, कोई मंदिर नहीं है क्योंकि प्रभु परमेश्वर और मेम्रा ही उसका मंदिर हैं। और अगर हम फिर से मंदिर को एक ऐसी जगह के रूप में समझते हैं जहाँ परमेश्वर रहता है, तो मुझे लगता है कि यह इमागो देई की मौलिक प्रकृति की ओर इशारा करता है, और हम इस बारे में बाद में भी बात करेंगे, कि परमेश्वर का एक रूप है, और उस रूप में, अगर आप चाहें, तो उसकी आत्मा समाहित है। और हम उसके रूप में, उसकी छवि और समानता में बनाए गए हैं, और हम उसकी आत्मा को भी समाहित करने के लिए बनाए गए हैं, जो अंततः, नई वाचा के माध्यम से होता है।

और इसलिए, इस अर्थ में, परमेश्वर स्वयं का मंदिर है, और जब सभी चीजें हल हो जाती हैं, तो वह मंदिर प्रतीत होता है। लेकिन उससे पहले, आपके पास स्वर्ग में परमेश्वर का मंदिर है, और वाचा का संदूक है, और बाकी सब वहाँ है। और इसलिए वे चीजें अनुक्रमिक प्रतीत होती हैं, जो संयोग से सुझाव देती हैं, आप जानते हैं, यदि आपके पास प्रकाशितवाक्य 11 में परमेश्वर का मंदिर है, और फिर यदि आपके पास पुस्तक के अंत में 10 अध्याय बाद में है कि कोई मंदिर नहीं है क्योंकि परमेश्वर ही मंदिर है, तो यह घटनाओं का एक क्रम है।

और, बेशक, प्रकाशितवाक्य घटनाओं के अनुक्रम से भरा हुआ है, जिसका मैं अभी संक्षेप में उल्लेख करूँगा, लेकिन यह सुझाव देता है, हाँ, स्वर्ग में समय जैसी कोई चीज़ है। लेकिन यह ज़रूरी नहीं कि यह हमारे जैसा हो; यह हमारा समय नहीं है, लेकिन यह समय है। यदि आपके पास घटनाओं का अनुक्रम है, तो आपके पास समय है।

और इसलिए, भगवान ने ब्रह्मांड की रचना करते समय, इसे स्वर्ग के समान समय और घटनाओं के अनुक्रम के साथ बनाया। लेकिन इसके लिए और अधिक खोज की आवश्यकता है। लेकिन, ठीक है, अगर हम इसे उत्पत्ति 2 में वापस ले जाते हैं, तो हम उन समानताओं को देखते हैं जिनके बारे में हम बात कर रहे थे।

तीनों मामलों में आपके पास जीवन का वृक्ष है, और आपके पास उस स्थान से बहने वाली नदी है, यह जेकेल और प्रकाशितवाक्य में ईश्वर का सिंहासन, उत्पत्ति 2 में अदन। और इसलिए, यहाँ विचार यह है कि समानताएँ वही हैं जो वे हैं। और इसलिए, यह क्या सुझाव देता है? खैर, यह सुझाव देता है कि अदन एक मंदिर था, और यह हम जो जानते हैं उसके अनुरूप है, कि मसीह सभी चीज़ों को नया बनाने के लिए आता है। और इसलिए, यह एक स्थापित बाइबिल सिद्धांत है कि अंत साइट समानांतर उर्जाइट, जो जर्मन में अंत समय समानांतर आदिम समय के लिए है।

और जैसा कि मैंने कहा, आपको कुछ जर्मन और लैटिन भी बोलना होगा ताकि लोगों को लगे कि आप विद्वान हैं। तो, कुछ जर्मन भी बोलें। मिस्र के लोग इसे समझते थे।

उनका मानना था कि हर फ़राओ का प्राथमिक कार्य सभी चीज़ों को पहले जैसा ही बहाल करना है। और यह मिस्र की सोच और बाइबिल की सोच के बीच कई उल्लेखनीय समानताओं में से एक है। वास्तव में, इसकी व्यापकता बहुत ही असामान्य है।

लेकिन यह किसी और दिन की बात है। ईडन के मंदिर की प्रकृति के लिए अन्य सबूत यह है कि एक बार जब पुरुष और महिला ने पाप किया, तो प्रभु ने उन्हें बाहर निकाल दिया, और जीवन के वृक्ष की ओर वापस जाने के रास्ते की रक्षा के लिए करूब और एक ज्वलंत तलवार रखी। और इसलिए, यह बाइबिल में करूब की पहली उपस्थिति है, उनका पहला उल्लेख है।

बाद में हमें पता चला कि करूबों की आकृतियाँ तम्बू के पर्दों में बुनी गई हैं। उन्हें सोलोमोनिक मंदिर के भीतरी और बाहरी मंदिर कक्ष की दीवारों में उकेरा गया है। हम जानते हैं कि हम आत्मा के मंदिर हैं, और यीशु कहते हैं कि स्वर्ग में हमारे स्वर्गदूत हमारी रक्षा करते हैं, और वे भी सेवा करने वाली आत्माएँ हैं।

वे करूब हैं या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है। लेकिन मुद्दा यह है कि, और मुझे यह भी जोड़ना चाहिए, कि प्राचीन निकट पूर्व में, करूब जैसी आकृतियाँ थीं, आकृतियों जैसी। उन्हें असीरियन मूल, करबू से बुलाया गया था, जिसका अर्थ है शक्तिशाली होना, जाहिर है।

और वे मंदिरों और महलों की रक्षा करते थे। तो, ऐसा लगता है कि वहाँ पर यह विचार है कि करूब और करूब मंदिरों की रक्षा करते हैं। संयोग से, यह आपके करूब शब्द के उपयोग को प्रभावित कर सकता है।

यदि आप यहजेकेल 1 में करूबों को देखें, तो वे बहुत ही भयानक, चार चेहरों वाली और बाकी सभी चीज़ों वाली बहुत ही भयानक आकृतियाँ हैं। मैं एक बार चर्च में उस अंश पर उपदेश दे रहा था, और उपदेश से पहले, युवा पादरी द्वारा किसी बच्चे का समर्पण किया जा रहा था, और उसने बच्चे को करूब के रूप में संदर्भित किया। और फिर मुझे इस बारे में बात करनी पड़ी कि करूब वास्तव में कैसे दिखते हैं।

इसलिए, जब आप बच्चों के बारे में बात कर रहे हों तो आपको एक अलग शब्द का इस्तेमाल करना चाहिए। लेकिन वैसे भी, वे मंदिर के संरक्षक प्रतीत होते हैं। तो फिर, ईडन एक मंदिर है।

इस सृजित व्यवस्था में, यह सवाल स्वाभाविक रूप से उठ सकता है, क्या आदम को पवित्र आत्मा के मंदिर के रूप में बनाया गया था? परमेश्वर ने उसे भूमि की मिट्टी से बनाया और उसके नथुनों में जीवन की साँस फूँकी, और वह एक जीवित प्राणी बन गया। खैर, भूमि पर धूल बहुत स्पष्ट लगती है। जीवन की साँस के बारे में क्या? पवित्र आत्मा जीवन से जुड़ी है।

क्या इसका मतलब यह है कि परमेश्वर ने अपनी आत्मा को मनुष्य में डाला ताकि आदम, पतन से पहले, आत्मा का मंदिर हो? मुझे लगता है कि सबूत यहाँ एक नकारात्मक उत्तर की ओर इशारा करते हैं। मुझे लगता है कि आदम को आत्मा द्वारा जीवित किया गया था। उसे आत्मा द्वारा जीवित रखा गया था, लेकिन उसके अंदर आत्मा का वास नहीं था।

और हम उस समझ तक कैसे पहुँचते हैं? क्योंकि उत्पत्ति 2 में यह काफी अस्पष्ट लगता है। खैर, इसके कई सबूत हैं। उत्पत्ति 6-3 में, बाढ़ से पहले, परमेश्वर कहता है, मेरी आत्मा मनुष्य के साथ हमेशा तक झगड़ा नहीं करेगी, क्योंकि वह नश्वर है। उसके दिन 120 साल के होंगे।

क्रिया का अनुवाद 'प्रतिबद्ध होना' किया गया है, जिसका अनुवाद 'रहना' या 'साथ रहना' किया जा सकता है। संभवतः, इसे हिब्रू में 'वाक्यांश क्रिया' कहा जाता है, और इसका सबसे अच्छा अनुवाद 'साथ रहना' है। हमने उत्पत्ति पर जॉन वेनहम की टिप्पणी का उल्लेख किया है, और वह इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं, और मुझे लगता है कि वह इस बारे में बिल्कुल सही हैं।

गॉर्डन वेनहम, क्षमा करें, उत्पत्ति पर उनकी टिप्पणी, और मुझे लगता है कि वह इस बारे में सही हैं। गॉर्डन वेनहम, संयोग से, एक बार यहाँ पढ़ाया करते थे। उन्हें यहाँ अतिथि के रूप में पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया गया था, और मुझे लगता है कि केवल एक व्याख्यान।

लेकिन मुझे याद है कि मैं उनसे एक सम्मेलन में मिला था, और हम इस बारे में बात कर रहे थे, और उन्होंने कहा, तो मैं यहाँ हूँ, गॉर्डन वेनहम, मैसाचुसेट्स के वेनहम में गॉर्डन कॉलेज में पढ़ा रहा हूँ। और उन्होंने कहा कि यह थोड़ा अवास्तविक था, लेकिन वह एक अच्छे व्यक्ति हैं। लेकिन मुझे लगता है कि वह इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं, और मुझे लगता है कि वह इस बारे में सही हैं, कि प्रभु उत्पत्ति 6-3 में कह रहे हैं, मेरी आत्मा मेरे साथ नहीं रहेगी।

इससे यह संकेत मिलता है कि आत्मा जीवन को बनाए रखती है, लोगों में निवास नहीं करती। और मुझे लगता है कि यह बड़ी तस्वीर के अनुरूप होगा। अगर सही समझ है तो मानव जीवन की सीमा 120 वर्ष है, जो आत्मा के काम से संबंधित प्रतीत होती है।

कुछ लोग यह सोचना चाहते हैं कि इसका मतलब यह है कि जलप्रलय आने में 120 साल और लगेंगे, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह जो कहा गया है उसका स्वाभाविक अर्थ है। और इसलिए, यह कार्य मानव जीवन को बनाए रखने का हो सकता है न कि उसमें निवास करने का। अय्यूब में, हम एलीहू को यह कथन करते हुए पढ़ते हैं: परमेश्वर की आत्मा ने मुझे बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस मुझे जीवन देती है।

जबकि ये समानांतर कोला, जो यहाँ हिब्रू के लिए एक तकनीकी शब्द है, लेकिन ये समानांतर रेखाएँ, यह स्पष्ट करती हैं कि आत्मा, परमेश्वर की रूआख ने उसे बनाया है, और साँस, निशामाह, उसे जीवन देती है। निशामाह वही शब्द है जो हमें उत्पत्ति 2 में मिलता है: प्रभु उसमें साँस फूँकता है, साँस, और वह उसमें साँस फूँकता है, और जीवन क्रिया से संबंधित है, बल्कि क्रिया शब्द, चैयम, जीवन से संबंधित है, जो हमें उत्पत्ति 2 में मिलता है। तो, हम यहाँ किस बारे में बात कर रहे हैं? एलीहू पिन्तेकुस्त से बहुत पहले एक पतित अवस्था में है, और इसलिए पतन के बाद मनुष्य, लेकिन पिन्तेकुस्त से पहले, कोई यह निष्कर्ष निकाल सकता है, आत्मा के मंदिर नहीं थे। क्योंकि संयोग से, यह एक और बात है: मंदिर शब्द का उपयोग कभी भी किसी मनुष्य द्वारा नहीं किया जाता है जब तक कि यीशु आकर यह न कहे, इस मंदिर को नष्ट कर दो, और तीन दिनों में, मैं इसे खड़ा कर दूँगा।

इसलिए, पुराने नियम में किसी को भी मंदिर नहीं कहा गया है, आदम या कोई और नहीं, और शब्द निश्चित रूप से उपलब्ध था। और आपको पुराने नियम में कभी नहीं बताया गया है कि पवित्र आत्मा किसी में वास करती है, और शब्द निश्चित रूप से उपलब्ध था। यह कहना आसान था कि क्या ऐसा कभी हुआ था। और इसलिए हम इस पर और अधिक गौर करेंगे, लेकिन यहाँ संकेत यह है कि एलीहू एक अच्छा आदमी है, लेकिन वह एक पतित व्यक्ति है, और वह पिन्तेकुस्त से पहले का है, इसलिए कोई संकेत नहीं है कि उसके अंदर कोई आत्मा निवास करती है, लेकिन उसके पास आत्मा है जो उसे बनाती है और उसे बनाए रखती है, आत्मा और साँस आप समानांतर मान सकते हैं और इसका मतलब एक ही बात को इंगित करना है।

खैर, आप कह सकते हैं, ठीक है, ठीक है, एलीहू एक अच्छा आदमी था। अय्यूब की पुस्तक में उसे काफी हद तक स्वीकार किया गया है, लेकिन हो सकता है कि वह चीजों पर अपना खुद का दृष्टिकोण दे रहा हो, और हो सकता है कि वह बिल्कुल सही न हो। मैं इसे आपके लिए प्रदर्शित नहीं करता, लेकिन आप यशायाह 42:5 को देख सकते हैं जहाँ आपको वही शब्द मिलते हैं, और हमें बताया गया है कि रूआख, परमेश्वर ग्रह पर सभी को रूआख देता है, और नेशामा, साँस। एनआईवी रूआख का अनुवाद जीवन के रूप में करता है, लेकिन स्पष्ट रूप से, यशायाह के दिनों में, प्रभु, इस भविष्यवक्ता के माध्यम से कह रहे हैं कि वह ग्रह पर सभी को जीवन, रूआख, आत्मा देता है, और मुझे लगता है कि हमें यह समझना होगा कि इसका मतलब यह नहीं है कि ग्रह पर हर किसी के अंदर पवित्र आत्मा निवास करती है, और वे सभी आत्मा के मंदिर नहीं हैं।

तो, लेकिन ये वही हैं, इससे यह संकेत मिलता है कि निश्चित रूप से पतन के बाद, कोई भी आत्मा का मंदिर नहीं है, और फिर भी उन सभी में किसी न किसी तरह रूआख और नेशामा है, और अगर आदम में नेशामा सांस ले रहा था, तो इसका आसानी से मतलब हो सकता है कि उसमें आत्मा थी जो उसे सहारा दे रही थी, उसे जीवन दे रही थी, और फिर भी उसमें निवास नहीं कर रही थी, और मुझे लगता है कि यही तस्वीर है। तो, हम पुष्टि करेंगे कि आत्मा जीवन की सांस थी जिसके द्वारा भगवान ने आदम को जीवन दिया, लेकिन जैसा कि आदम और एलीहू इस मामले में समानांतर हैं, और यशायाह के अनुसार ग्रह पर हर कोई, वे, आप जानते हैं, आदम आत्मा का मंदिर नहीं था। ठीक है, ओह, और हाँ, आप जानते हैं क्या? मुझे याद नहीं है कि मैंने इसे शामिल किया था, लेकिन मेरे पास यह है, इसलिए यहाँ आपके पास है।

वह अपने सभी लोगों को सांस देता है और उन लोगों को जीवन देता है जो इस पर चलते हैं, और इसलिए हम ठीक इसी बारे में बात कर रहे थे। जीवन वास्तव में यहाँ आत्मा है। ठीक है, तो सामान्य अनुग्रह के तहत सभी लोगों के पास यह है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे आत्मा के मंदिर हैं।

यहाँ आत्मा और लोगों के बारे में तर्क की एक और पंक्ति है, अब पुराने नियम में अधिक व्यापक रूप से, पूर्वसर्ग पर या करने के लिए लगभग हर समय उपयोग किया जाता है जब किसी के संबंध में आत्मा की बात होती है, और हम यहाँ केवल कुछ उदाहरण देखेंगे, मुद्दा यह है कि आपको कभी नहीं बताया गया है कि पवित्र आत्मा किसी में निवास करती है। तो, हम यहाँ क्या कर रहे हैं? हम यह निष्कर्ष निकाल रहे हैं कि आदम, सभी संभावनाओं में, सबूतों के आधार पर, सबसे उचित निष्कर्ष यह है कि वह आत्मा का मंदिर नहीं था। उसके अंदर पवित्र आत्मा का निवास नहीं था।

वह पाप रहित था। वह पाप से बच सकता था, लेकिन उसके अंदर पवित्र आत्मा का वास नहीं था। यह भी एक क्लासिक समझ है, और कभी-कभी लोग सोचते हैं कि, ठीक है, अगर उसने शैतान को सफलतापूर्वक हरा दिया था, तो किसी समय, उसमें आत्मा भर गई होगी या कुछ और, और यह उचित है।

यह अटकलें हैं। हम नहीं जानते। पतन के बाद, निश्चित रूप से, किसी में भी आत्मा का वास नहीं होता।

उस शब्दावली का कभी भी उपयोग नहीं किया जाता है, निवास में। लेकिन अन्य अभिव्यक्तियाँ हैं जिनका उपयोग किया जाता है, और जैसा कि हमने कहा है, ज्यादातर पूर्वसर्ग पर, कभी-कभी पूर्वसर्ग के लिए। अगर हम इन उदाहरणों को देखें, संख्या 11, मूसा कहता है, मैं उस आत्मा को ले लूँगा जो तुम पर है।

इसलिए, मूसा के बारे में भी हमें यह नहीं बताया गया कि उसमें आत्मा निवास करती है, बल्कि वह आत्मा जो तुम पर है, और उसने उन पर आत्मा डाल दी। और ये वे 70 लोग हैं जो लोगों का बोझ उठाने में उसकी मदद करने जा रहे हैं। जब शमूएल ने शाऊल को राजा के रूप में

अभिषेक किया और उसे बताया कि क्या होने वाला है, तो ऐसा हुआ: भविष्यद्वक्ताओं का जुलूस शाऊल से मिला, और परमेश्वर की आत्मा शक्ति के साथ उस पर उतरी, और वह उनकी भविष्यवाणी में शामिल हो गया, और इसलिए लोगों ने कहा, क्या शाऊल भी भविष्यद्वक्ताओं में से है? और फिर वह बाहर जाता है और राज्य का काम करता है, लेकिन आत्मा उस पर है।

दाऊद के मामले में, आप सोच सकते हैं, ठीक है, अगर मूसा के बाद कभी कोई ऐसा व्यक्ति था जिसके अंदर आत्मा थी, तो वह दाऊद होगा, लेकिन हमें ऐसा नहीं बताया गया है। शमूएल ने उसका अभिषेक किया, और उस दिन से, हम पढ़ते हैं कि प्रभु की आत्मा, सचमुच, शक्ति के साथ दाऊद के पास उतरी। तो, आत्मा उसके साथ है, उसके पास आ रही है, और यह एक अच्छी बात है, लेकिन यह एक आत्मा के होने के समान नहीं है।

ऐसे कुछ मामले हैं जो किसी कार्य या काम के लिए अस्थायी या कभी-कभार भरे जाने का संकेत देते हैं। आपको यहाँ कुछ बुतपरस्त विचार मिलते हैं। उदाहरण के लिए, फिरौन, क्या हम इस आदमी, यूसुफ, जैसा कोई व्यक्ति पा सकते हैं, जिसमें ईश्वर या देवताओं की आत्मा है? खैर, प्रभु यूसुफ को वह बुद्धि दे रहे हैं जिसकी उसे ज़रूरत है, और फिरौन यह बताने में सक्षम है कि इसमें कुछ दिव्य है।

उसमें एक दिव्य आत्मा काम कर रही है, लेकिन फिरौन को बस इतना ही पता है। आपको फिरौन से पवित्र आत्मा का सटीक धर्मशास्त्र नहीं मिलेगा, लेकिन यह उसकी धारणा है। निर्गमन 28 में, हम पढ़ते हैं, कुशल पुरुषों से कहो कि मैंने उन्हें बुद्धि दी है, और इब्रानी कहता है, मैंने हारून के लिए वस्त्र बनाने के लिए बुद्धि की आत्मा से भर दिया है, इत्यादि।

इसलिए, प्रभु ने उनमें एक कार्य के लिए अपनी आत्मा डाली है। हमें यह नहीं बताया गया है कि आत्मा उनमें निवास करती है। इसी तरह, बसलेल, मैंने उसे परमेश्वर की आत्मा से भर दिया, इस सारे कौशल और योग्यता के साथ ताकि वह तम्बू तैयार करने के लिए आवश्यक कार्य कर सके।

हमें यह नहीं बताया गया है कि आत्मा उसमें वास करती थी। हमें बताया गया है कि आत्मा थी, वह एक निश्चित कार्य के लिए आत्मा से भरा हुआ था। इसी तरह, निर्गमन 35:31 से 35:31 तक, उसने उसे परमेश्वर की आत्मा से भरा है, 32, कलात्मक डिजाइन बनाने के लिए, 33, पत्थरों को काटने और स्थापित करने के लिए, और इसी तरह।

और इसी तरह, आयत 35 में। इसलिए, अगर हम इन सब को जोड़ दें, तो हम पाते हैं कि परमेश्वर कुछ खास कामों को पूरा करने के लिए अपनी आत्मा दे रहा है। और इसलिए, यह एक उभरती हुई तस्वीर है कि आत्मा लोगों पर कुछ कामों के लिए आती है।

कभी-कभी यह अभिव्यक्ति हो सकती है कि परमेश्वर किसी व्यक्ति को किसी निश्चित कार्य के लिए अपनी आत्मा से भरता है, लेकिन ऐसा कोई संकेत नहीं है कि आत्मा हर समय उस व्यक्ति में निवास करती है। मीका 3 में भी, मैं यहोवा की आत्मा, न्याय और सामर्थ्य से भरा हुआ हूँ, याकूब को उसके अपराध की घोषणा करने की शक्ति से। याकूब को उसके अपराध की घोषणा करने की आत्मा से भरा हुआ हूँ।

तर्कसंगत रूप से, कोई यह अनुमान लगा सकता है कि, ठीक है, और एक बार जब भविष्यवाणी का काम पूरा हो जाता है, तो वह आत्मा से भरा नहीं रहता। और यहाँ फिर से, यह डेटा के बारे में खुद के साथ वास्तव में सख्त होने का मामला है। हम ईसाइयों के बारे में आत्मा से भरे होने के बारे में बात करते हैं, और इसलिए आप मीका को पढ़ते हैं, हम सोचते हैं, ठीक है, वह एक आत्मा से भरा हुआ व्यक्ति रहा होगा, जैसा कि एक ईसाई हो सकता है।

यह बिल्कुल भी मुद्दा नहीं है। ऐसा नहीं कहा गया है। और अगर इन मामलों और बहुत से मामलों में सच्चाई जाननी है तो सख्त होना ही होगा।

ठीक है, डैनियल में, यहाँ आपको एक और बुतपरस्त राय मिलती है। आपके राज्य में एक आदमी है जिसने बेलशस्सर की दावत में इसे देखा जब उसने दीवार पर लिखावट देखी, और कोई भी इसकी व्याख्या नहीं कर सका। रानी कहती है, ठीक है, यह एक आदमी है जिसके अंदर पवित्र देवताओं की आत्मा है, और इसी तरह।

खैर, वह कुछ जानती है कि डैनियल ने क्या किया है। उसका निष्कर्ष यह है कि उसके अंदर पवित्र देवताओं की आत्मा है। खैर, फिर से, वह जानती है कि कोई दिव्य आत्मा काम कर रही है, लेकिन वह बहुदेववादी सोच रही है, तो वह वास्तव में क्या समझती है? वहाँ कोई सबूत नहीं है कि आत्मा हर समय डैनियल में रहती थी।

जैसा कि हमने कहा, पुराने नियम के किसी भी व्यक्ति ने कभी मंदिर नहीं बुलाया, और ऐसा करना काफी आसान होता। इस संबंध में यहजेकेल 36:27 बहुत महत्वपूर्ण है, जहाँ आपके पास उन लोगों के लिए एक खुला वादा है जो अब मूसा की वाचा के अधीन हैं। उनके पास टोरा है।

उनके पास परमेश्वर के बहुत से रहस्योद्घाटन हैं। लेकिन कुछ ऐसा वादा जो अभी तक नहीं हुआ है लेकिन होगा, मैं अपनी आत्मा तुममें डालूँगा और तुम्हें मेरे नियमों का पालन करने और मेरे नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित करूँगा। यह नई वाचा के महान वादे का पूर्वानुमान है।

इसी तरह की बात, कथन के इर्द-गिर्द की घटनाओं के संदर्भ में, जो निर्वासन और पुनर्स्थापना से संबंधित हैं, व्यवस्थाविवरण 30 में संरचनात्मक रूप से कुछ हद तक समानांतर है, जहाँ प्रभु कहते हैं, मैं तुम्हारे हृदयों का खतना करूँगा। यह कहने का एक और तरीका है, मुझे लगता है, वही बात, जो हम रोमियों 2 में सीखते हैं कि आत्मा द्वारा की जाती है। हृदय का खतना आत्मा द्वारा होता है।

पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को अपने हृदय का खतना करने के लिए कहा गया है और प्रोत्साहित किया गया है, जो कि, ज़ाहिर है, वे नहीं कर सकते। लेकिन हमें कभी नहीं बताया गया कि उनके हृदय का खतना हो चुका है। और यह केवल प्रभु ही करता है।

और आप इसे रोमियों 2 में पाते हैं। और व्यवस्थाविवरण 30 में इसका वादा है। लेकिन यहाँ आपके पास है, मैं अपनी आत्मा को तुम्हारे अंदर डालूँगा और तुम्हें मेरे नियमों का पालन करने और मेरे नियमों को मानने के लिए प्रेरित करूँगा। और यूहन्ना में, हम यह कथन भी पढ़ते हैं कि

जिस आत्मा के बारे में हम यहाँ बात कर रहे हैं, लोगों में, हमारे अंदर निवास करने के लिए आत्मा का दान, हमारे भीतर प्रवाहित और बहता हुआ, अभी भी होना बाकी है।

इसके द्वारा, उनका मतलब उस आत्मा से था जिसे उन लोगों को प्राप्त करना था जो उन पर विश्वास करते थे। उस समय तक, आत्मा अभी तक नहीं दी गई थी क्योंकि यीशु को अभी तक महिमा नहीं दी गई थी। और अंत में, इस विषय पर, यूहन्ना 14 में यीशु का कथन, सत्य की आत्मा, वह आपके साथ रहता है और आप में रहेगा।

तो, वह, ग्रीक तुम्हारे लिए वहाँ है। तुम्हारे साथ, वह रहता है या है। और तुम्हारे अंदर, वह रहेगा।

यह काफी अंतर है। और मैं कहूँगा कि यह पुराने नियम के तहत जीवन और नए नियम के तहत या उसमें जीवन के बीच के अंतर को पूरी तरह से दर्शाता है। आपके साथ आत्मा का होना बहुत अच्छा है।

दाऊद के पास हर दिन आत्मा आती थी। वह हर दिन उसके साथ था। शिष्यों के पास भी आत्मा थी।

इसका क्या मतलब है? वे बाहर गए और सुसमाचार का प्रचार किया। उन्होंने बीमारों को चंगा किया। उन्होंने दुष्टात्माओं को निकाला।

आपके साथ आत्मा का होना बहुत अच्छी बात है। लेकिन आपके अंदर आत्मा का होना, आपको परमेश्वर की आज्ञा मानने और उसके लिए ज्यादा जीने के लिए प्रेरित करना, इससे भी बेहतर है। और यही वह चीज़ है जो हमें नई वाचा के तहत मिलती है।

और जैसा कि हमने कहा है, हालाँकि आदम पाप रहित था, लेकिन संकेत यह होगा कि उसके अंदर आत्मा का वास नहीं था। ठीक है, फिर से, आदम की वाचा सामग्री के अंतर्गत, स्त्री की रचना, हमें उत्पत्ति 2 में अधिक विवरण मिलता है, जैसा कि हमने कहा है, यह वही है जिसकी आप बहुत से मुद्दों पर अपेक्षा करते हैं। बेशक, कभी-कभी चर्च में सेवा, विवाह, इत्यादि के बारे में बहुत विवाद और पुरुष-महिला का पूरा मामला होता है।

कुछ मुख्य शब्द हैं। फिर से, मुझे लगता है कि हम पाएंगे कि डेटा हमें बहुत कुछ बताता है। बहुत कुछ ऐसा है जो वे हमें नहीं बताते।

तो, परमेश्वर ने स्त्री को एक सहायक बनाया। और इसका क्या अर्थ है? खैर, इसका इस्तेमाल निश्चित रूप से अक्सर प्रभु के लिए एक उद्धारकर्ता के रूप में किया जाता है। यह एक उगारितिक शब्द से संबंधित है, और उस शब्द का अर्थ है शक्ति, और इसलिए शायद एक शक्ति या एक संसाधन।

कि प्रभु स्त्री को बनाने जा रहा है। इस शब्द का बाइबिल में क्या उपयोग है? इस शब्द का इस्तेमाल मुख्य रूप से परमेश्वर के लिए किया जाता है जो इस्राएल के लिए सहायक है। लेकिन

इसका इस्तेमाल पुरुषों के लिए भी किया जाता है, और यह जेकेल 12 में, एक और मामला है जो लागू हो सकता है, लेकिन यह सबसे स्पष्ट है।

इस्राएल के राजकुमार के सहायक जो निर्वासन में जाते हैं। मैं उनके चारों ओर, उनकी लाठी, और सचमुच उनकी सहायता, और उनकी सारी सेना को हवा में उड़ा दूँगा। उनकी लाठी।

इसका अनुवाद इसी तरह किया गया है। यह सैन्य हो सकता है, और यह नहीं भी हो सकता है। लेकिन यहाँ मुद्दा यह है कि, इस मामले में, यह जेकेल में। स्पष्ट रूप से, राजकुमार के सहायक राजकुमार के अधीन हैं।

और इसलिए, जब प्रभु महिला को सहायक बनाता है तो सहायक शब्द के उपयोग के संबंध में आप पूरी तरह से अस्पष्ट तस्वीर के साथ आते हैं। इसका मतलब यह हो सकता है कि वह, ठीक है, शायद इसका मतलब यह नहीं है कि वह परमेश्वर से ऊपर है। इसका मतलब यह हो सकता है कि वह इस्राएल के राजकुमार की सहायक की तरह है, किसी भूमिका के अर्थ में उसके अधीन है।

इसका मतलब यह हो सकता है कि वह उसकी बराबरी की है। क्यों नहीं? आप नहीं जान सकते। और मुझे लगता है, फिर से, अगर हम इस बारे में बौद्धिक रूप से ईमानदार होने जा रहे हैं, तो हमें इस शब्द के अर्थ के संदर्भ में इसे यहीं छोड़ना होगा।

खैर, वह उसे सिर्फ एक महिला नहीं बनाता, वह उसे सिर्फ एक सहायक नहीं बनाता, बल्कि वह उसे एक उपयुक्त सहायक बनाता है। केनेग, हालांकि, हिब्रू में, पहले, सामने से मेल खाता है। और यह निश्चित रूप से इस विचार पर आधारित है कि वे दोनों भगवान की छवि में बने हैं।

इसलिए वे पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। रिश्ता संभव है। लेकिन यह आपको सिर्फ इतना ही बताता है।

और इसलिए, यह उनके द्वारा उनकी छवि में बनाए जाने के बारे में व्यवसाय की ओर लौटता है, जिसके बारे में हमने उत्पत्ति 1:27 से तर्क दिया है कि इसका भूमिकाओं से कोई लेना-देना नहीं है। यह आपको इस बारे में कुछ नहीं बताता कि पति अपनी भूमिका में किसी तरह से पत्नी का मुखिया है या नहीं, इत्यादि। ईश्वर स्त्री का निर्माण करता है, हिब्रू शब्द है, पुरुष से।

वह उसे मनुष्य से बनाती है। और हम, पीटर, बल्कि पॉल, निर्माण के इस विचार का उपयोग करते हैं। हमारे पास एक शाश्वत घर है।

यह एक शरीर है, एक महिमामय शरीर, जो मानव हाथों से नहीं बनाया गया है। भगवान इसे बनाने जा रहे हैं। हम वही बनने जा रहे हैं।

इसलिए, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, पौलुस ने दोनों की रचना के क्रम के बारे में कुछ बताया है। स्त्री पुरुष से बनी है, पुरुष से निर्मित है। लेकिन फिर से, अगर हम खुद के साथ सख्त होने जा रहे

हैं, अगर हम उत्पत्ति 1 और 2 में सामग्री को देखें, और फिर 3 में भी, यह बहुत अस्पष्ट है, यह सब।

और इसलिए, आप किसी एक स्थिति या दूसरे पर बहस करने के लिए इस तरह के सबूत का उपयोग नहीं करना चाहते। क्योंकि अगर आप ऐसा करते हैं, तो किसी दिन कोई ऐसा व्यक्ति जो इन चीजों को समझता है, वह आपके पास आएगा और आपको बताएगा कि आप क्या कर रहे हैं और आप वास्तव में उन चीजों को क्यों नहीं कह सकते। या अगर ईश्वर आप पर कृपालु है, तो कोई व्यक्ति आएगा और ऐसा करेगा, क्योंकि हमें अपनी गलतियों को बताने के लिए लोगों की आवश्यकता है।

ठीक है, नामकरण के बारे में क्या? अक्सर कहा जाता है, ठीक है, वह उसका नाम रखता है, इसका मतलब है कि उसका उस पर अधिकार है। नामकरण का महत्व। जब परमेश्वर चीज़ों का नाम रखता है तो इस्तेमाल किया जाने वाला मुहावरा क्रिया है पुकारना और पूर्वसर्ग करना।

तो, यह सचमुच किसी चीज़ को पुकारना है। वह उसका नाम रखता है। जब आदम जानवरों का नाम रखता है, तो उसी मुहावरे का इस्तेमाल किया जाता है।

लेकिन फिर उत्पत्ति 2:23 में, उसे स्त्री कहा जाएगा, क्योंकि वह पुरुष से ली गई थी। निष्क्रिय में यह वही मुहावरा है। तो, उन सभी मामलों में, आपके पास एक ही मुहावरा है।

आदम ने स्त्री को सामान्य नाम दिया, हम कहें तो स्त्री। और यही मुहावरा तब इस्तेमाल किया जाता है जब परमेश्वर ने सृजित चीज़ों का नाम रखा और जब आदम ने जानवर का नाम रखा। ठीक है, ठीक है, यही बात है।

मुझे नहीं लगता कि आप इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आदम अपनी पत्नी के लिए वैसा ही है जैसा कि ईश्वर सृजित व्यवस्था के लिए है, लेकिन उसी मुहावरे का इस्तेमाल किया गया है। यहाँ सवाल यह है कि ये नाम मुहावरे आखिरकार किस पर आकर टिकते हैं? जब, पतन के बाद, वह उसका नाम हव्वा रखता है, तो एक अलग मुहावरे का इस्तेमाल किया जाता है। संयोग से, मैं पतन से पहले उसे महिला के रूप में संदर्भित करना पसंद करता हूँ क्योंकि पतन के बाद ही उसे हव्वा नाम मिला।

इसलिए, पतन के बाद, आदम उसे उसका उचित नाम देता है। पतन से पहले, वह उसे उसका सामान्य नाम, स्त्री देता है। पतन के बाद, वह उसे उसका उचित नाम देता है।

यह उसका व्यक्तिगत नाम है। और यह मूल शब्द 'होना' या 'जीना' से बना है, और ऐसा इसलिए है क्योंकि वह सभी जीवित प्राणियों की माँ होगी। इसलिए, वहाँ इस्तेमाल किया जाने वाला मुहावरा अलग है।

यह उसी क्रिया का संयोजन है जिसे पुकारना कहते हैं। लेकिन फिर आपको शब्दों के साथ एक संबंधकारक निर्माण में नाम शब्द मिलता है। तो, उसने अपनी पत्नी या महिला का नाम शाब्दिक रूप से पुकारा।

तो, यहाँ सवाल यह है कि क्या इन मुहावरों में अंतर महत्वपूर्ण है? यानी, यहाँ पर बुलाना मुहावरे और यहाँ पर नाम पुकारना मुहावरे के बीच का अंतर क्या महत्वपूर्ण अंतर है? मुझे नहीं लगता कि ऐसा कोई संकेत है कि यह कोई महत्वपूर्ण अंतर है। उस मुहावरे के बारे में क्या जिसे वह उसे ईव कहता है, कि वह अपनी पत्नी का नाम ईव कहता है? इसका इस्तेमाल कैसे किया जाता है? खैर, इसका इस्तेमाल बच्चों के नाम रखने के लिए किया जाता है। इसका इस्तेमाल बाद में शहरों के नामकरण में किया जाता है।

इसका प्रयोग तब किया जाता है जब परमेश्वर सारे का नाम बदलकर साराह करता है। और इसका प्रयोग तब भी किया जाता है जब परमेश्वर याकूब का नाम बदलकर इस्राएल करता है। तो, ये सभी ऐसे मामले हैं जिनमें जाहिर तौर पर नामकरण करने वाले व्यक्ति के पास अधिकार होता है।

मुझे नहीं पता कि एक शहर बनाने और फिर उसका नाम रखने और यह कहने का क्या मतलब है कि, ठीक है, तब आपके पास अधिकार है। लेकिन आपके पास उसे एक पहचान देने का अधिकार ज़रूर है। एक नाम एक पहचान देता है।

और इसलिए लगता है कि यहाँ यही बात है। और इसलिए, अच्छा, तो इसका क्या मतलब है? क्या इसका मतलब यह है कि, इसका मतलब यह है कि आदम ने वास्तव में उसका नाम रखा है। और इसलिए उसका उस पर अधिकार है।

या पतन के बाद, तो आप कह सकते हैं कि वह उस पर अधिकार जमा लेता है। लेकिन इनमें से कोई भी बात वास्तव में ऐसी बात नहीं है जिस पर हम जोर दे सकें क्योंकि उसी मुहावरे का इस्तेमाल तब किया जाता है जब हागर परमेश्वर का नाम लेती है।

परमेश्वर के उसके सामने प्रकट होने के बाद, हम पढ़ते हैं कि उसने यह नाम उस प्रभु को दिया जिसने उससे बात की थी। यह वही मुहावरा है जो हमारे पास तब आता है जब आदम अपनी पत्नी का नाम हव्वा रखता है। और मुझे लगता है कि यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि जब हागर ने परमेश्वर का नाम लिया, तो उसके पास परमेश्वर पर अधिकार नहीं था।

इसलिए नामकरण, यहाँ उचित निष्कर्ष यह है कि नामकरण मुहावरों का उपयोग आमतौर पर, लेकिन हमेशा नहीं, यह इंगित करता है कि नाम देने वाले के पास नामित चीज़ का नाम रखने का अधिकार है। कोई यह तर्क देना चाह सकता है कि उचित नाम देने के अधिकार का हनन हुआ है, क्योंकि आदम ने पतन के बाद ऐसा किया था। लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि मुहावरे में अधिकार आवश्यक रूप से शामिल नहीं है, जैसा कि हम हागर के मामले से देखते हैं, जो कि अस्पष्ट भी है।

खैर, स्त्री के निर्माण के व्युत्पन्न तरीके के बारे में क्या? उत्पत्ति 2 में, हम पढ़ते हैं कि प्रभु ने पुरुष को गहरी नींद में डाल दिया, और जब वह सो रहा था, तो उसने पुरुष की एक पसली ली और उस जगह को मांस से बंद कर दिया। फिर प्रभु परमेश्वर ने पसली से एक स्त्री बनाई या बनाई। ठीक है, मुझे लगता है कि यह अपने आप में संक्षिप्त है।

यह हमें पदानुक्रम के बारे में कुछ नहीं बताता। यह ध्यान देने योग्य है कि प्रभु ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से बनाया, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि भूमि की मिट्टी का आदम पर अधिकार है, या वह उच्च श्रेणी का प्राणी है, या ऐसा कुछ भी। इसलिए, आप इस तरह की बात को इस अंश से नहीं निकाल सकते।

लेकिन फिर, अगर हम थोड़ा बाइबिल धर्मशास्त्र करना चाहते हैं और बाइबिल में आगे देखना चाहते हैं और पॉल क्या कहता है, तो यह सवाल उठता है। पॉल कहते हैं कि एक महिला को शांत और पूर्ण समर्पण के साथ सीखना चाहिए। मैं एक महिला को काम करने या किसी पुरुष पर अधिकार रखने की अनुमति नहीं देता।

उसे चुप रहना चाहिए, क्योंकि आदम पहले बना था, फिर हव्वा। अब, मैं यहाँ इस बारे में ज़्यादा नहीं बोल रहा हूँ, लेकिन मैं कहूँगा कि एक से ज़्यादा विद्वानों की सोच और तर्क-वितर्क का एक तरीका है कि, ठीक है, इफिसुस में एक स्थिति थी, और यह समस्याग्रस्त थी, और महिलाएँ वहाँ समस्याएँ पैदा कर रही थीं। और इसलिए, पौलुस की आज्ञाएँ, उसके आदेश, तीमुथियुस को दिए गए उसके निर्देश इफिसुस-विशिष्ट, चर्च-विशिष्ट थे, और उनके अर्थ में सामान्य नहीं थे।

जब हम बयान के आखिरी हिस्से को पढ़ते हैं तो यह थोड़ा समस्याग्रस्त हो जाता है क्योंकि उसकी अपील इफिसुस की स्थिति के लिए नहीं, बल्कि सृजित व्यवस्था के लिए है। लेकिन मैं इसे वैसे ही छोड़ता हूँ जैसा कि यह है। लोग इससे जूझेंगे।

वे इन मामलों पर असहमत होंगे। लेकिन यहाँ मुद्दा यह है कि, जैसा कि हम उत्पत्ति 1 और 2 को देखते हैं, मुद्दा यह है कि हम इन बहुत ही संक्षिप्त डेटा के आधार पर जो निष्कर्ष निकालते हैं, उसे सीमित रखना चाहते हैं। ये सामग्रियाँ हमें बहुत कुछ बताती हैं।

बहुत कुछ ऐसा है जो वे हमें नहीं बताते। इसलिए, हम आगे की समझ के लिए न्यू टेस्टामेंट को देखना चाहते हैं। मैंने यहाँ गॉर्डन ह्यूजेनबर्गर का उल्लेख मेरेडिथ क्लाइन के एक अन्य छात्र के रूप में किया है, और अब गॉर्डन कॉनवेल में सहायक प्रोफेसर के रूप में।

उन्होंने वहाँ कुछ समय तक पढ़ाया, कई सालों तक पार्क स्ट्रीट चर्च में पादरी रहे, अब सहायक के रूप में वापस आ गए हैं। उन्होंने यह लेख यह तर्क देने के लिए लिखा कि पॉल वास्तव में घर के बारे में बात कर रहे हैं न कि चर्च के बारे में। इसलिए, इसका मंत्रालय में महिलाओं से कोई लेना-देना नहीं है।

मैं व्यक्तिगत रूप से सोचता हूँ कि यह तर्क थोड़ा सा बेबुनियाद है। वह एक अच्छा भाई है। मैं उससे प्यार करता हूँ।

लेकिन अगर आप चाहें तो इसे पढ़ सकते हैं और देख सकते हैं कि आप इससे क्या समझते हैं। खैर, उत्पत्ति में पुरुष-महिला मिलन के लिए हम पारिवारिक या संबंधपरक निहितार्थ क्या पाते हैं? उत्पत्ति 2 में, हम पुरुष और पत्नी के बारे में क्या पढ़ते हैं? पुरुष अपने पिता और माता को छोड़ देगा और अपनी पत्नी के साथ एक हो जाएगा। वे एक शरीर बन जाएँगे।

संयुक्त शब्द क्रिया से जुड़ा है, जो हिब्रू में, बहुत करीब से जुड़ा हुआ है। यह बाद में व्यवस्थाविवरण 13 में एक संदर्भ में दिखाई देता है जिसमें तर्क दिया गया है कि आपको झूठे भविष्यद्वक्ताओं का अनुसरण नहीं करना चाहिए। आपको अपने परमेश्वर यहोवा का अनुसरण करना चाहिए, और आपको उसका आदर करना चाहिए, उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए, उसकी सेवा करनी चाहिए और उससे जुड़े रहना चाहिए।

यह उस शब्द का एक बहुत ही दिलचस्प उपयोग है क्योंकि मुझे लगता है कि यह प्रभु और उसके लोगों के बीच वैवाहिक संबंध के विचार को दर्शाता है, जिसे हम युगांतशास्त्रीय रूप से देखते हैं। बेशक, पॉल भी इस पर अपील करता है। पॉल बाद में इफिसियों 5 में उत्पत्ति की कुछ आयतों को लेता है। और इसलिए यहाँ फिर से, अगर पॉल 1 तीमुथियुस में इफिसुस में तीमुथियुस को लिख रहा है, तो वह सेवकाई में महिलाओं के बारे में लिख रहा है और सृजित व्यवस्था को अपील कर रहा है।

यहाँ वे वैवाहिक सम्बन्ध के बारे में लिख रहे हैं, लेकिन साथ ही सृजित व्यवस्था की अपील भी कर रहे हैं। और इसलिए, यहाँ वे कहते हैं, पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन वैसे ही रहें जैसे प्रभु के अधीन, क्योंकि पति पत्नी का मुखिया है जैसे मसीह कलीसिया का मुखिया है। और इसी तरह अब जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियों को भी हर बात में अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए।

हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा कि मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया, कि उसे वचन के द्वारा जल से धोकर शुद्ध करे, और उसे अपने सम्मुख एक ऐसी चमकती हुई कलीसिया करके खड़ा करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और दोष हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। उसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे; जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपनी देह से बैर नहीं रखा, बरन उसका पालन-पोषण और देखभाल करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के लिये करता है, क्योंकि हम उसकी देह के अंग हैं।

और फिर वह यहाँ उत्पत्ति 2:24 को उद्धृत करता है। इस कारण, एक आदमी अपने पिता और माँ को छोड़ देगा और अपनी पत्नी से जुड़ जाएगा, और वे दोनों एक तन हो जाएँगे। यह एक गहरा रहस्य है, लेकिन मैं मसीह और कलीसिया के बारे में बात कर रहा हूँ। हालाँकि, आप में से प्रत्येक को अपनी पत्नी से भी उतना ही प्यार करना चाहिए जितना वह खुद से करता है, और पत्नी को अपने पति का सम्मान करना चाहिए।

खैर, यहाँ पॉल के हवाले से कहें तो, वह मसीह और चर्च के बारे में बात कर रहा है, लेकिन वह केवल मसीह और चर्च के बारे में बात नहीं कर रहा है। वह यहाँ स्पष्ट रूप से विवाह के बारे में बात कर रहा है। और इसलिए हम इसका क्या मतलब निकालते हैं? श्लोक 24 में एक बहुत ही मजबूत कथन है, जिसे यहाँ ठीक से उद्धृत करने के लिए, जैसे चर्च मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियों को अपने पतियों और हर चीज़ के अधीन होना चाहिए।

खैर, यह काफी मजबूत लगता है। तर्क दिया गया है कि श्लोक 21, 21 और 22 में, वास्तव में आपके पास प्रस्तुत शब्द का दोहरा कर्तव्य है। इसलिए जब यहाँ कहा गया है, पत्नियाँ अपने पतियों के प्रति वैसे ही समर्पित रहें जैसे प्रभु के प्रति, तो पिछली आयत में कृदंत का उपयोग करते हुए आपसी समर्पण की बात की गई थी, मसीह के प्रेम में एक दूसरे के प्रति समर्पित होना।

और इसलिए, क्रिया वास्तव में पद 22 में नहीं दिखाई देती है। इसे बस आगे ले जाया गया है और समझा गया है। और इसलिए पद 21 में मसीह में एक दूसरे के अधीन रहो, पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन रहो।

प्रभु के बारे में। मुझे आशा है कि यह स्पष्ट है। यह क्रिया का दोहरा उपयोग है।

इस तरह की बात हमेशा होती रहती है। अगर मैं कहता हूँ, मैं किराने की दुकान पर गया और डाकघर गया, तो यह समझा जाता है कि क्रिया मैं गया डाकघर पर भी लागू होती है। मैं डाकघर गया।

क्रिया दोहरा काम करती है। जो लोग यहाँ समानतावादी स्थिति पर बहस करना चाहते हैं, वे कहते हैं, ठीक है, यह दोहरा है। यह श्लोक 21 में पारस्परिक समर्पण है। और श्लोक 22 में क्रिया को ग्रहण किया गया है।

इसलिए, वहाँ भी पारस्परिक समर्पण होना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि यह स्पष्ट हो सकता है कि यह एक बहुत ही दोषपूर्ण तर्क है। पुरुषों और महिलाओं के बारे में कोई भी दृष्टिकोण रखना चाहे, यह एक अच्छा तर्क नहीं है क्योंकि किसी चीज़ का दोहरा उपयोग करने का मतलब यह नहीं है कि दोनों मामलों में इसका एक ही तरह से उपयोग किया जाता है।

फिर से, श्लोक 22 में दिया गया कथन बहुत मजबूत लगता है। और ऐसा लगता है कि यह विवाह के एक हिस्से को सौंपा गया है। इसलिए, विवाह के बारे में कोई भी दृष्टिकोण अपनाए, उसे इस बात की समझ के अनुरूप होना चाहिए जो इसका अर्थ समझ सके।

तो फिर, पौलुस के इस अंश में हमें क्या समानताएँ मिलती हैं? आपके पास पति है जो पत्नी का मुखिया है, और मसीह है जो कलीसिया का मुखिया है। पति पत्नी की सेवा वैसे ही करता है जैसे मसीह कलीसिया की सेवा करता है और पत्नी से प्रेम करता है। वह उसकी देखभाल वैसे ही करता है जैसे मसीह कलीसिया, अपने शरीर की करता है।

पत्नी पति की आज्ञा मानती है या चर्च की तरह मसीह के अधीन रहती है। और मैं कहूँगा कि इस मुद्दे पर, जो एक संवेदनशील मुद्दा है, मैं यहाँ जो करने की कोशिश कर रहा हूँ वह है सामग्री को देखना और यह वास्तव में क्या कहता है। जैसा कि मैं अक्सर छात्रों को इस और अन्य मुद्दों पर बताता हूँ, मुझे वास्तव में परवाह नहीं है कि यह कैसे सामने आता है।

मैं बस यह समझना चाहता हूँ कि यह क्या कह रहा है। मेरी पत्नी और मेरे बीच एक ऐसा रिश्ता है जिसे पूरक विवाह कहा जा सकता है। इसलिए, इसे जिस तरह से मैंने सुझाया है, उसी तरह से समझना चाहिए, जिसमें इसका मतलब भी शामिल है।

यह कैसा दिखता है? मेरे पास ऐसी महिलाएँ हैं जो समानतावादी हैं और हमारी शादी को देखती हैं, और उन्हें ऐसा लगता है कि यह एक समानतावादी शादी है। हम बहुत सी चीज़ें साझा करते हैं। मेरी पत्नी ने हार्वर्ड से एप्लाइड मैथ में पीएचडी की है।

उसने मौसम के मोर्चों के गणितीय मॉडलिंग पर अपना शोध प्रबंध किया। और इसलिए वह काफी बुद्धिमान है। वह काफी सक्षम है।

उसने अपना करियर बनाने के बजाय अपने बच्चों को घर पर ही पढ़ाने का फैसला किया। हम बहुत से फैसले साझा करते हैं। मेरे मुखियापन से ऐसा लगता है कि वास्तव में कुछ आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिलता है, और अगर कोई निर्णय लेना है, तो जिम्मेदारी मेरी है।

यह इसी तरह काम करता है। लेकिन मैं यह दावा नहीं करूँगा कि मैं उससे वैसे ही प्यार करता हूँ जैसे मसीह ने चर्च से किया था, कि मैं इस काम में पूरी तरह से खरा उतरता हूँ। लेकिन यह पति का काम है।

और मैं बस इतना कह रहा हूँ कि एक पूरक विवाह को अत्याचार की तरह नहीं दिखना चाहिए, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं। आप एक पूरक विवाह कर सकते हैं। आपकी पत्नी का करियर और बाकी सब कुछ हो सकता है।

लेकिन यह हर रिश्ते में अपने तरीके से खेला जाता है। लेकिन मुझे लगता है कि बाइबिल के डेटा हमें यही बता रहे हैं। मैं डेटा इसलिए कहता हूँ क्योंकि, वास्तव में, डेटा लैटिन में डेटाम या डेटाम का बहुवचन है।

तो, यह बहुवचन है। और इसलिए, हालांकि ये चीज़ें समय के साथ बदलती रहती हैं, उदाहरण के लिए, लैटिन में स्टेडियम का बहुवचन स्टेडिया है। लेकिन लोग स्टेडिया नहीं कहते।

वे स्टेडियम कहते हैं। इसलिए, ये चीज़ें कोण-आकार की हो जाती हैं और उपयोग में बदल जाती हैं। लेकिन चूंकि यह लैटिन बहुवचन है, इसलिए मुझे बहुवचन का उपयोग करना पसंद है।

इसलिए, जब आप यह सुनेंगे, तो आप इसे समझ जाएँगे क्योंकि मैंने इसे एक से अधिक बार कहा है। यहाँ समापन प्रश्न क्या हैं? खैर, आप समर्पण के दोहरे कर्तव्य के उपयोग के बारे में क्या सोचते हैं? यह सोचने वाली बात है। आप पद 24 के बारे में क्या सोचते हैं? और ये पद एक सक्रिय व्याख्या के रूप में कैसे संबंधित हैं? उन्हें एक साथ कैसे समझा जाना चाहिए? और आप उस समानता के बारे में क्या सोचते हैं जिसे पॉल ने यहाँ खींचा है? स्पष्ट रूप से, मैंने इन बातों को आपके लिए स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

मैं वह नहीं कहने जा रहा हूँ जो आपको सोचना चाहिए। लेकिन मैं यह समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि वे क्या कहते हैं। और इन व्याख्यानों में हम समय-समय पर नए नियम की ओर रुख करेंगे, जो कि, आखिरकार, पुराने नियम में पाए जाने वाले इन मामलों पर अंतिम शब्द है, जहाँ यह वास्तव में प्रासंगिक लगता है और कुछ ऐसी बातों को छूता है जिन पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

लेकिन अभी के लिए, सृष्टि वाचा पर हमारी टिप्पणियाँ यहीं समाप्त होंगी। और जब हम सृष्टि वाचा पर टिप्पणियाँ जारी रखेंगे, तो हम देखेंगे कि उस वाचा के संदर्भ में क्या होता है जब स्त्री और पुरुष वाचा को तोड़ते हैं, इसकी सभी गतिशीलता और दुर्भाग्यपूर्ण परिणामों के साथ।

यह डॉ. जेफरी नीहॉस बाइबिल धर्मशास्त्र पर अपनी शिक्षा में है। यह सत्र 2, आदमिक वाचा, भाग 2 है।